Notes

1

समाजशास्त्र–एक परिचय

समाज लोगों द्वारा उत्पन्न होता है और इसमें उनके लिए भी स्थान होता है, जो इसको उत्पन्न करते हैं। अपने दैनन्दिन जीवन में लोग सामान्यत: मानव समाज के बारे में और विशेषत: उस समाज के बारे में विचार करते हैं जिसमें वे रहते हैं। यूरोप में आई नवचेतना और औद्योगिक क्रांति ने मानव समाज के निर्माण के पारम्परिक आधार पर प्रश्न चिह्न लगाए और एक नई मूल्य प्रणाली पर ध्यान केंद्रित करते हुए, इसकी पुनर्रचना की। वह क्या है, जो लोगों को आपस में बाँधता है? वह कौन-सी प्रकियाएँ हैं, जो लोगों का सामाजिक अस्तित्व बनाती हैं? कोई समाज बना कैसे रहता है? यह समाज की संरचना के साथ जुड़े वास्तविक तौर पर सामाजिक संबंधों का ताना-बाना ही है। इसने समाज वैज्ञानिकों को प्रेरित किया कि वे समाज की संरचना एवं प्रक्रियाओं के विषय में अनुशासित ढंग से विचार करें।

इस पाठ में हम समाजशास्त्र के अर्थ और पारिभाषिक पक्ष की विवेचना करेंगे, समाजशास्त्र की प्रकृति अर्थात सामाजिक संबंधों के अभिलक्षणों से उभरने वाले इसके चरित्र का अध्ययन करेंगे तथा समाज विज्ञान की विषय-वस्तु यानि उन प्रसंगों की चर्चा करेंगे, जिनका अध्ययन हम समाजशास्त्र में करते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप इस योग्य होंगे कि:

- समाजशास्त्र का अर्थ समझा सकें;
- समाजशास्त्र की प्रकृति का विवेचन कर सकें;

Notes

- समाजवैज्ञानिक परिदृश्य पर विचार विमर्श कर सकें;
- समाजशास्त्र की विषय वस्तु और कार्य क्षेत्र का वर्णन कर सकें; एवं
- दैनिक जीवन में समाजशास्त्र की प्रासंगिकता बता सकें।

1.1 समाजशास्त्र क्या है?

ऑगस्त कॉम्टे वह पहले विद्वान थे, जिन्होंने मानवीय अन्तर्सम्बंधों के विज्ञान के संदर्भ में 'समाज विज्ञान' शब्द का प्रयोग किया। 'समाज विज्ञान' यह शब्द लैटिन शब्द 'सोसियस' (अर्न्तसंबंध) एवं ग्रीक शब्द 'लोगस' (सिद्धान्त) से मिल कर बना है और मानवीय अन्तर्संबंधों से बने समाज के विज्ञान या सिद्धान्तों को व्यक्त करता है। कॉम्टे एक ऐसे समाज विज्ञान की स्थापना करना चाहते थे, जो उन नियमों को उद्घाटित करने में सहायता करें, जिनसे उनको विश्वास था कि विकास और परिवर्तन नियंत्रित होते हैं। हर्बर्ट स्पेंसर ने समाज के क्रमबद्ध अध्ययन का विकास किया और खुलकर समाजशास्त्र शब्द का प्रयोग किया।

सरल शब्दों में कहें तो समाजशास्त्र व्यक्तियों को अध्ययन करने का एक तरीका है। समाजशास्त्री यह जानना चाहते हैं कि लोग जैसा आचरण करते हैं, वे वैसा आचरण क्यों करते हैं? वे समूह क्यों बनाते हैं? युद्ध क्यों करते हैं? उपासना क्यों करते हैं? वोट देने क्यों जाते हैं? या ऐसा कोई भी अन्य कार्य जिसमें पारस्परिक अन्योन्य क्रिया होती है, क्यों करते हैं? **अतः समाजशास्त्र की परिभाषा में हम कह सकते हैं कि यह सामाजिक संबंधों, संस्थाओं और समूहों का वैज्ञानिक अध्ययन है।** समाजशास्त्रियों ने समाजशास्त्र की बहुत सी परिभाषाऐं दी हैं। ऑगस्त कॉम्टे ने समाज विज्ञान को परिभाषित करने की समस्या के समाधान के रूप में इसे एक विद्या विशेष के रूप में लिया है और इसकी प्रकृति की रूपरेखा प्रस्तुत की। परवर्ती समाज शास्त्रियों ने समाजशास्त्र के अर्थ पर ध्यान केंद्रित किया। हॉबहाऊस ने समझाया कि कैसे समाजशास्त्र "मानवीय मस्तिष्कों की अन्योन्य क्रियाओं" का अध्ययन है? पार्क एवं बर्गस की मान्यता थी कि "समाजशास्त्र सामूहिक व्यवहार का विज्ञान है"। तदापि एमाइल दुर्खीम ने अधिक सही ढंग से कहा कि "समाजशास्त्र सामाजिक प्रक्रमों का अध्ययन है।"

मैक्स वेबर ने समाज विज्ञान की परिभाषा एक दूसरे ही ढंग से की। उनका कहना है कि मानवीय क्रियाएँ किसी कर्म-विशेष की ओर उन्मुख होती हैं। कर्मों का गन्तव्य कुछ उद्देश्यों की पूर्ति करना है। समाज में व्यक्ति, नियत लक्ष्यों/अभिरुचियों की प्राप्ति के लिए कर्मों में लगे रहते हैं। मैक्स वेबर के अनुसार, कर्म समाज विज्ञान की विषय-वस्तु हैं। समाज विज्ञान के प्रारंभ से वर्तमान काल तक सामाजिक कर्म समाजशास्त्र के विषय माने गये हैं।

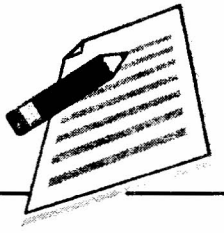

संक्षेप में, यह माना जा सकता है कि समाजशास्त्र मानवीय जीवन के सामाजिक पक्षों का वैज्ञानिक अध्ययन है। इसके अलावा, समाजशास्त्र, मानवीय अन्तर्सम्बंधों के विषय में वैज्ञानिक ढंग से एकत्रित किया गया ज्ञान भंडार है। अन्तर्संबंधों से हमारा अर्थ है, दो या अधिक व्यक्तियों के बीच का पारस्पारिक संबंध-अन्योन्य क्रिया युक्त उद्दीपन एवं प्रतिक्रिया। अतः **समाजशास्त्रियों का सरोकार समाज में रहने वाला व्यक्ति है, मानव समूह है।** इन परिभाषाओं से हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि समाजशास्त्र मानव समाज, एवं सामाजिक व्यवहार के साथ-साथ सामाजिक संबंधों और इसके रूपों का अध्ययन है।

1.2 समाजशास्त्र की प्रकृति

समाजशास्त्र एक वैज्ञानिक विषय है। यह विज्ञान है क्योंकि इसमें शोध के लिए वस्तुनिष्ठ, क्रमबद्ध विधियों का प्रयोग होता है और सामाजिक यथार्थ का मूल्यांकन अनुभव जन्य प्रमाणों और व्याख्याओं के प्रकाश में किया जाता है। लेकिन, इसको प्राकृतिक विज्ञानों के साँचे में ढालकर प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, क्योंकि, मानवीय व्यवहार प्राकृतिक जगत से बिल्कुल भिन्न है। अन्य भिन्नताओं में एक यह है कि प्राकृतिक विज्ञानों की विषय वस्तु अपेक्षाकृत स्थायी एवं अपरिवर्तनीय है, जबकि समाजशास्त्र की विषय-वस्तु, मानवीय व्यवहार, लचीला एवं चलायमान है।

पाठगत प्रश्न. 1.1

प्रत्येक कथन के सामने सत्य या असत्य लिखिए:

1. औद्योगिक क्रांति अमेरिका में हुई।
2. ऑगस्त कॉम्ट को समाजशास्त्र का पिता कहा जाता है।
3. समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन है।
4. समाज विज्ञान मानव समाज का अध्ययन नहीं है।
5. मानवीय व्यवहार लचीला और चलायमान है।

1.3 विज्ञान क्या है?

विज्ञान का अर्थ है, किसी परिघटना के विषय में ज्ञान संग्रह करने के लिए शोध की वस्तुनिष्ठ विधियों एवं तर्कों का उपयोग किया जाय। विज्ञान के तीन लक्ष्य हैं – पहला,

Notes

यह समझना कि कोई घटना क्यों घटी। दूसरा, सामान्यीकरण करना अर्थात एकसम मामलों के परे जाकर ऐसे वक्तव्य का कथन जो एक समूह पर लागू हो। तीसरा, प्राक्कथन यानि उपलब्ध ज्ञान के प्रकाश में यह बताना कि भविष्य में क्या घटने वाला है।

वैज्ञानिक शोध की मूल भावना, पूर्वाग्रह एवं पक्षपात रहित वस्तुनिष्ठ ज्ञान प्राप्त करना है। यही कारण है कि समाज विज्ञान में प्राकृतिक विज्ञानों की वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने का आग्रह हो। विज्ञान की उपयुक्त विधि यह है कि व्याख्यात्मक साध्यों का तथ्यों से मिलान करते हुए लगातार परीक्षण किया जाय– चाहे यह प्रयोगों द्वारा हो या अनुभवों द्वारा। इस संदर्भ में, समाजशास्त्र भी विज्ञान है, क्योंकि यह सामाजिक यथार्थ के तर्क सम्मत एवं वस्तुनिष्ठ ज्ञान की मूल शर्तों को पूरा करता है और वैज्ञानिक विधि का उपयोग करता है। जॉन्सन की दृष्टि से, समाजशास्त्र में विज्ञान के निम्नलिखित अभिलक्षण हैं:

(क) **यह सिद्धान्त-आधारित हैं:** यह कोशिश करता है कि संश्लिष्ट प्रेक्षणों को सार रूप देकर ऐसे तर्क सम्मत साध्यों के रूप में प्रस्तुत किया जाए जो विषय वस्तु में कार्य-कारण संबंधों की व्याख्या करने में समर्थ हों। इसका मुख्य लक्ष्य, सामाजिक प्रक्रमों की प्रकृति समझाने के लिए समाजवैज्ञानिक आंकड़ों में संबंध स्थापित करना और उनकी व्याख्या करना तथा ऐसी परिकल्पना प्रस्तुत करना है, जिनकी अंतिम वैधता को आगे किये गये अनुभव जन्य शोध के आधार पर जांचा जा सके।

(ख) **यह अनुभव परक है:** यह प्रेक्षणों और तर्कों पर आधारित है, अटकलों/अनुमान जन्य रहस्योद्घाटनों पर नहीं, इसके परिणाम अनुमान मात्र नहीं हैं। सच है कि अपने सृजनात्मक कार्य के प्रारंभ में सभी वैज्ञानिक अनुमानों का सहारा लेते हैं, पर कम से कम आदर्श स्थिति तो यह है कि उनकी वैज्ञानिक साध्य के रूप में प्रस्तुति से पहले वे उन अनुमानों की तथ्यात्मक जाँच कर लेते हैं। समाज वैज्ञानिक ज्ञान के सभी पक्ष सामाजिक व्यवहार के मूल्यांकन के विषय हैं, या अनुभवजन्य परीक्षणों की कसौटी पर कसे जा सकते हैं।

(ग) **यह संचयी है:** समाज वैज्ञानिक सिद्धान्त एक दूसरे से निर्देशित हैं, नये सिद्धान्त पुराने सिद्धान्तों के विकास और परिष्कार से निर्मित होते हैं। इस प्रकार सैद्धान्तिक एकीकरण, समाजशास्त्रीय सूत्रों के निरूपण का लक्ष्य माना जाता है। अतः समाज विज्ञान संचयी है।

(घ) **यह आचार नियन्ता शास्त्र नहीं है:** समाजशास्त्री यह नहीं पूछते कि कोई विशिष्ट सामाजिक आचरण सही हैं या गलत वे केवल उसकी व्याख्या करने का प्रयास करते हैं। वे मूल्यों से रू-बरू होते हैं। मानवीय संबंधों का अध्ययन,

समाजशास्त्र का प्राथमिक मुद्दा है। इस संदर्भ में मोरिस जिंस्बर्ग का मानना है कि नैतिक समस्याओं के हल का प्रयास निष्पक्षता से किया जाना चाहिए। केवल परिस्थिति के सम्पूर्ण ज्ञान पर आधारित वस्तुनिष्ठता एवं तर्क संगति ही समाजशास्त्र के लिए वैज्ञानिक प्रतिष्ठा सुनिश्चित कर सकते हैं।

इन सब पहलुओं की दृष्टि से देखें तो समाजशास्त्र पूर्णता से बहुत दूर है, पर, धीरे-धीरे उस ओर बढ रहा है।

1.4 परिदृश्यों का समाजशास्त्र

सामाजिक परिदृश्य समाज एवं सामाजिक व्यवहार संबंधी वह व्यापक मान्यताएँ हैं जो विशिष्ट समस्याओं के अध्ययन के लिए दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। समाजशास्त्र में दो मुख्य विवरणात्मक परिदृश्य हैं। ये हैं प्रत्यक्षवादी (परम्परावादी वैज्ञानिक परिदृश्य) एवं घटना-क्रिया-विज्ञानवादी जिसको 'कम वैज्ञानिक' बताते हुए कुछ शोधार्थी वैज्ञानिक विधियों से निर्मित सिद्धान्त के विचार को ठुकरा देते हैं और उनपर व्याख्यात्मक विधियों को वरीयता देते हैं। अन्य विषयों की तरह ही समाजशास्त्र में भी घटनाओं को समझने समझाने के भिन्न तरीके हैं। आमतौर पर हम यह सोचने के लिए नहीं रुकते कि हमारे दैनन्दिन जीवन और व्यवहार में उपरोक्त परिदृश्यों में से कोई न कोई कार्यशील है।

1.4.1 प्रत्यक्षवाद

प्रत्यक्षवाद, समाजशास्त्र की परम्परावादी विधि है, जिसे सामान्यत: ऑगस्त कॉम्टे के साथ जोड़ा जाता है। सामाजिक तथ्यों को रिपोर्ट करने पर कॉम्टे द्वारा दिया जाने वाला बल वैसा ही है, जैसा हम सामाजिक विज्ञानों में पाते हैं, जहाँ प्रक्रमों को समझने एवं विश्लेषण करने में यर्थाथता एवं वस्तुनिष्ठता आधारभूत अभिलक्षण हैं। वैज्ञानिक विधि में तथ्यों को रिकॉर्ड करते समय तर्क का उपयोग एक अतिरिक्त विशेषता है। इस प्रकार, कॉम्टे का योगदान, वैज्ञानिक शोध पर आधारित ज्ञान के लिए है। संगृहित तथ्यों, जिनमें सम्मतियाँ मनोवृत्तियाँ, एवं अस्थाएँ सम्मिलित हैं, का पुनर्परीक्षण एवं अनुमोदन, विवेक और विश्लेषण के आधार हैं। इस तरह की विधि अपने अनुप्रयोग एवं कार्यान्वयन में सार्वभौमिक है।

प्रत्यक्षवाद शोध में पक्षपातहीनता एवं वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता पर बल देता है। यह प्राकृतिक विज्ञानों की विधियों से बराबरी करने की चेष्टा पर आधारित है:

1. समस्या की पहचान

Notes

2. तथ्यों का संकलन
3. व्याख्यात्मक परिकल्पना
4. परिकल्पना की परख विधि
5. निष्कर्षों का विश्लेषण
6. आवश्यक हो तो पुनर्परीक्षण
7. परिणामों की व्याख्या: रिपोर्ट

निहितार्थ: प्रत्यक्षवाद का व्यापक निहितार्थ यह है कि एक वस्तुनिष्ट विश्व अस्तित्वमान है, जिसको वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक भाषा में समझा जा सकता है।

समाजशास्त्र की प्रत्यक्षवादी विचारधारा में दो प्रधान सैद्धान्तिक परिदृश्य विद्यमान हैं जो अपनी उपलब्धियों के लिए वैज्ञानिक तकनीकों की ओर उन्मुख होते हैं। ये हैं:

1. **क्रियात्मकतावादी परिदृश्य:** क्रियात्मक विश्लेषण, जिसे क्रियात्मकतावाद और संरचनात्मक क्रियात्मवाद भी कहा जाता है, का मूल समाजशास्त्र के उद्भव में है। क्रियात्मकतावादी परिदृश्य के प्रवर्तक थे– हर्बर्ट स्पेंसर एवं एमाइल दुर्खीम। उनकी दृष्टि में समाज एक 'स्व-नियंत्रक, स्वसंपोषक समाज प्रणाली है, जिसकी कुछ मूलभूत आवश्यकताएँ हैं जैसे कि समाज-व्यवस्था का संरक्षण, माल एवं सेवाओं की आपूर्ति करना एवं बच्चों को सुरक्षा प्रदान करना। यदि ये आवश्यकताएँ पूरी होती हैं तो उनका मानना है कि समाज संतुलन में रहेगा। सार रूप में कहें तो क्रियात्मकतावादी परिदृश्य समाज प्रणाली में स्थायित्व एवं व्यवस्था पर ध्यान केंद्रित करता है।

2. **द्वन्द्वात्मक परिदृश्य:** द्वन्द्वात्मक सिद्धान्तवादी, सामाजिक असमानताओं पर बल देते हैं और समाज को ऐसे व्यक्तियों एवं समूहों से बनी प्रणाली मानते हैं, जो दुलर्भ संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्द्धारत हैं। ये समूह आपस में संघ बना सकते हैं या परस्पर सहयोग कर सकते हैं, परन्तु सतही सद्भाव के नीचे दुर्लभ संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त करने हेतु प्रतिस्पर्द्धात्मक संघर्ष चलते रहते हैं। द्वन्द्वात्मक सिद्धान्तवादी वृहद् मानवीय स्तर पर भी ध्यान केन्द्रित करते हैं। आधुनिक समाज में कार्ल मार्क्स ने बुर्जुआ (उत्पादन व्यवस्था के मालिकों) एवं सर्वहारा (इन मालिकों के लिए काम करने वाले मजदूरों) के बीच होने वाले संघर्षों पर ध्यान केन्द्रित किया, लेकिन आज के द्वन्द्वात्मक सिद्धान्तशास्त्रियों ने इस परिदृश्य को विस्तृत कर इसमें छोटे समूहों और यहाँ तक कि मूलभूत संबंधों को भी शामिल कर दिया है।

1.4.2 घटना–क्रिया विज्ञान (व्याख्यात्मक परिदृश्य)

द्वितीय सैद्धान्तिक परिदृश्य को घटना-क्रिया विज्ञान कहा जाता है। इसका उद्भव मुख्यतया: मैक्स वेबर से हुआ। घटना-क्रिया विज्ञानी का सरोकार मानवीय व्यवहार को कर्त्ता की अपनी स्थिति-परिस्थितियों के संदर्भ में समझना है। अत: घटनाक्रिया विज्ञानी यह देखता है कि दुनियां का अनुभव कैसे होता है। उसके लिए वही महत्वपूर्ण यथार्थ है, जिसको लोग जानते और मानते हैं। अत: इस परिदृश्य में अध्ययन की वस्तुनिष्ठ विधियों के विकास पर कम बल दिया जाता है और जिनका अध्ययन किया जा रहा है दुनियां को उन्हीं की आँखों से देखने को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। इसलिए इस परिदृश्य में कर्त्ताओं की व्यक्तिपरक व्याख्याओं को समझने की आवश्यकता पर अधिक बल दिया जाता है।

निहितार्थ: इस विधि का व्यापक निहितार्थ यह है कि समाज की निर्मिति लोगों के दृष्टिकोणों और प्रेक्षणों से होती है। वस्तुपरक अर्थों में सामाजिक विश्व नाम का कोई अस्तित्व नहीं है।

उपर्युक्त सामाजिक परिदृश्यों में से प्रत्येक सामाजिक यथार्थ के भिन्न-भिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है: क्रियात्मकतावादी परिदृश्य सामाजिक व्यवस्था एवं स्थायित्व पर, द्वन्द्वात्मकता का सिद्धान्त सामाजिक तनावों और परिवर्तनों पर, एवं घटना-क्रिया परिदृश्य, सामाजिक यथार्थ के कारकों की व्यक्तिपरक व्याख्या पर। इन परिदृश्यों में से प्रत्येक समाज की प्रकृति को समझने और उसका विश्लेषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

पाठगत प्रश्न 1.2

निम्न रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द लिखिए:

1. अन्वेषण की वस्तुपरक विधि का प्रयोग कहलाता है.....।
2. समाजशास्त्र की पारम्परिक विधि है.....।
3. क्रियात्मकतावाद ध्यान केन्द्रित करता है ..... एवं ..... पर।
4. समाजशास्त्री परिदृश्य समाज एवं सामाजिक व्यवहार के विषयों में व्यापक..... ..... हैं।

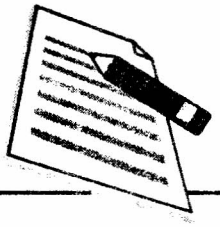

Notes

1.5 समाजशास्त्र का कार्यक्षेत्र

समाजशास्त्र, मानव समाज का क्रमबद्ध एवं वस्तुपरक अध्ययन है। समाजशास्त्री व्यक्ति के सामाजिक कर्मों का अध्ययन करते हैं। सामाजिक संबंध, जैसे कि पति-पत्नि के सबंध, गुरु-शिष्य के संबंध, विक्रेता और खरीददार के संबंध एवं सामाजिक प्रक्रियाएँ, जैसे कि सहकारिता, प्रतिस्पर्द्धा, द्वन्द्व तथा संगठन, समुदाय एवं राष्ट्र और सामाजिक संरचनाएँ (परिवार, श्रेणी, राज्य) समाजशास्त्रीय अध्ययन के आधार हैं। मूल्यों एवं मानकों द्वारा निर्देशित गतिविधियाँ सामाजिक संस्थाओं को जन्म देती हैं। इसलिए, समाजशास्त्र, सम्पूर्ण समाज जीवन का अध्ययन है। समाजशास्त्र के सरोकारों और अभिरुचियों का **परास** काफी व्यापक है। यह सामाजिक संबंधों, संस्थाओं और समितियों को रूपों और श्रेणियों में बांटने का प्रयास करता है और मानवीय जीवन के आर्थिक, राजनैतिक, नैतिक एवं सामाजिक पहलुओं में संबंध ढूँढने की कोशिश करता है।

यद्यपि समाजशास्त्र की विषय वस्तु के बारे में कोई आम राय नहीं है। फिर भी यह माना जाता है कि समाजशास्त्र, उन अन्योन्य क्रिया प्रणालियों का अध्ययन है– जो सामाजिक संस्थाओं, राज्य एवं नियामक व्यवस्थाओं को आकार प्रदान करती हैं। अत: समाजशास्त्र में हम सामाजिक संगठन, सामाजिक संरचना, संस्थाओं एवं संस्कृति के विषय में अध्ययन करते हैं।

1.5.1 सामाजिक संगठन

'सामाजिक संगठन' यह शब्द समाज के विभिन्न पक्षों की परस्पर निर्भरता की ओर इशारा करता है और यह समूहों, समुदायों, एकत्रीकरणों जैसे सभी टिकाऊ सामाजिक अस्तित्वों का एक अनिवार्य अभिलक्षण है। हर्बर्ट स्पेन्सर ने आर्थिक, राजनैतिक और दूसरे सामाजिक विभागों के अन्तर्संबंधों (संयोजन, वियोजन) को व्यक्त करने के लिए 'सामाजिक संगठन' शब्द का प्रयोग किया है।

एमाईल दुर्खीम, सामाजिक संगठन में अनन्य रूप से, नैतिकता एवं मूल्यों के बारे में आम राय बनाकर समाज का एकीकरण और नियमन शामिल करते हैं। वर्तमान में, सामाजिक संगठन शब्द का प्रयोग कारखानों एवं अस्पतालों के कर्मचारी गुटों से लेकर विशाल स्तर के समाजों और संगठनों में सभी आकारों के विभिन्न अंग समूहो की परस्पर निर्भरता को बताने के लिए किया जाने लगा है।

1.5.2 सामाजिक संरचना

सामाजिक संरचना व्यक्तियों के बीच के अन्तर्संबंधों का खाका (पैटर्न) है। प्रत्येक

Notes

समाज की अपनी एक सामाजिक संरचना होती है, जो इसकी निर्णय एवं शक्ति संबंधी प्रधान संस्थाओं, समूहों और व्यवस्थाओं से मिलकर बनती है। ऐसा कहा जाता है कि सामाजिक संरचना के अध्ययन की तुलना मानव शरीर रचना (एनाटॉमी) एवं शरीरविज्ञान (फिजियोलॉजी) के अध्ययन से की जा सकती है।

1.5.3 सामाजिक संस्था

सामाजिक संस्था एक कार्यप्रणाली है, प्रथा है, उपकरण है और इसलिए एक काल खण्ड में संग्रहित विभिन्न रीति-रिवाजों एवं आदतों का परिणाम है। प्रत्येक समाज में अपनी अस्तित्वमान रहने की आवश्यकता पूर्ति के लिए लोग सामाजिक संस्थाओं का सृजन करते हैं। संस्थाएँ मानवीय कार्य-सम्पादन के उपकरण एवं तरीका होते हैं। इस प्रकार कोई संस्था, मानकों, मूल्यों एवं भूमिकाओं का एक स्थायी समूह है।

1.5.4 संस्कृति

संस्कृति द्वारा धर्म, रीति-रिवाजों, विश्वासों और कलाकृतियों के अतिरिक्त अन्य चिह्नों एवं भाषा का मान होता है। वास्तव में, संस्कृति दैनिक जीवन का निर्णायक तत्व है। अपने आपमें संस्कृति सामाजिक होती है। यह मानव जीवन और उसकी सम्भावनाओं को आकार देने और आकार सुधारने का उपकरण है। समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती है।

1.6 समाजशास्त्र की प्रासंगिकता

समाजशास्त्र एक ऐसा विषय है, जिसकी हमारे जीवन में महत्वपूर्ण व्यावहारिक प्रासंगिकता है। यह सामाजिक समालोचना एवं व्यावहारिक सामाजिक समस्याओं में कई तरह से योगदान कर सकता है। मुख्यत: ये हैं:

1. विद्यमान सामाजिक परिस्थितियों के समुन्नत की गहरी एवं स्पष्ट समझ प्राय: हमें उनपर नियंत्रण पाने का ज्यादा अच्छा अवसर प्रदान करती है।

2. समाजशास्त्र हमारी सांस्कृतिक संवेदनशीलता को बढ़ाने के साधन प्रदान करता है, जिससे विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता पर आधारित नीतियाँ बनाई जा सकती हैं।

3. हम एक विशिष्ट नीतिगत कार्यक्रम को लागू करने के परिणामों का अध्ययन कर सकते हैं।

4. अन्त में, और संभवत: सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि समाजशास्त्र जो

आत्म ज्ञान प्रदान करता है जिसके प्रकाश में व्यक्तियों एवं समूहों को अपने जीवन की स्थितियां सुधारने का एक अतिरिक्त अवसर प्राप्त होता है।

पाठगत प्रश्न 1.3

निम्न का उत्तर 1 से 8 पक्तियों में दीजिए:

1. समाज विज्ञान का कार्य क्षेत्र क्या है?
2. दैनिक जीवन में समाजशास्त्र की क्या प्रासंगिकता है?
3. विज्ञान के चार अभिलक्षण कौन से हैं?

आपने क्या सीखा

- समाजशास्त्र का उद्‌भव आधुनिक औद्योगिक समाजों के विकास के प्रारंभ में एक बौद्धिक प्रयास के रूप में हुआ और इन समाजों का अध्ययन ही इनका मुख्य सरोकार रहा।
- एक विषय के रूप में समाजशास्त्र की एक सुस्पष्ट वैज्ञानिक प्रतिष्ठा है, जो समाज और उसके रूप भेदों के अध्ययन संबंधी इसकी मूल अवधारणाओं, अभिगमों और वर्गीकरणों पर आधारित है।
- काम्टे, स्पेंसर, मार्क्स, वेबर एवं दुर्खीम के दृष्टिकोणों एवं प्रतिपादनों से यह स्वयं सिद्ध है कि वैज्ञानिक विषय होने के आलावा समाजशास्त्र का सरोकार मानवीय समस्याओं को समझना भी है।
- समाजशास्त्र का कार्य-क्षेत्र काफी विस्तृत है। इसमें सामान्यत: समाज और व्यक्तियों के परिदृश्य से सामाजिक संबंधों का अध्ययन शामिल होता है और विशेषत: विशिष्ट व्यक्ति, समूह और संस्था का।

पाठान्त प्रश्न

1. समाजशास्त्र से क्या तात्पर्य है?
2. सामाजिक परिप्रेक्ष्य की क्या विशिष्टता है?
3. ऑगस्त कॉम्टे को समाजशास्त्र का पिता क्यों कहा गया है?

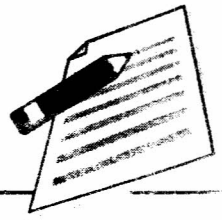

Notes

4. समाजशास्त्र में दुर्खीम का सरोकार क्या है?

5. समाजशास्त्र क्या है? समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति की विवेचना कीजिए।

6. समाजशास्त्र के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों को समझाइए।

7. समाजशास्त्र की प्रकृति एवं कार्य क्षेत्र का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. असत्य
2. सत्य
3. सत्य
4. असत्य
5. सत्य

1.2

1. विज्ञान
2. प्रत्यक्षवाद
3. सामाजिक व्यवस्थाएँ एवं स्थायित्व
4. मान्यताएँ

1.3

3. सैद्धान्तिक, अनुभवजन्य, संग्राही, आचार नियंता नहीं।

पाठ्य पुस्तकें

- बोट्टोमार, टी. बी. (1978), सोशियालॉजी: ए गाइड टू प्रॉब्लम एण्ड लिटिरेचर, बॉम्बे: ब्लैकी एण्ड सन्स
- गिड्डेन्स, एन्थोनी (1994), सोशियोलॉजी: ऑक्सफोर्ड, पोलिटी प्रेस इन एसोशियेसन विद ब्लैकवेल पब्लिशर्स

Notes

- जॉन्सन, एच.एम. (1960), सोशियोलोजी: ए सिस्टेमेटिक इन्ट्रोडक्शन, बॉम्बे: इलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड।
- मिल्स, सी. राईट (1959), द सोशियोलोजीकल इमेजीनेशन न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस
- नागला, बी. के. एवं एस. बी. सिंह (2002), इन्ट्रॉडक्शन टु सोशियोलोजी, नई दिल्ली: एन. सी. ई. आर. टी.।